

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे
संस्कृत विशारद (बी.ए.) – बहिस्थ
परीक्षा : मे - २०२४
सत्र २ रे

विषय: व्याकरण – २ (19E421)

दिनांक : २२/०५/२०२४	गुण : ८०	वेळ : स. १०.०० ते १.००
----------------------------	-----------------	-------------------------------

सूचना : सर्व प्रश्न अनिवार्य

- प्र. १. अ) सूत्राणि सोदाहरणं स्पष्टीकुरुता।(६तः५) (३०)**
- | | | |
|--------------------------|-------------------------------|------------------------------|
| १. इण्कोः। | २. ईदूदेदद्विवचनं प्रगृह्यम्। | ३. छलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः। |
| ४. कर्तुरीप्सिततमं कर्म। | ५. अपादाने पञ्चमी | ६. समो गम्यृच्छिभ्याम्। |

- आ) परस्मैपदसूत्राणि सोदाहरणं सवृत्तिकं च विवृणुत। (१०)**

- प्र. २.अ) रूपाणि लिखता।(७तः५) (०५)**
- | | | |
|---------------------------------------|-----------------------|---------------------------------|
| १) आमन्त लिट् प्रथम पुरुष द्विव- पूज् | २) षष्ठी एकवचन- मरुत् | ३) प्रथमा बहुवचन- एतद् (स्त्री) |
| ४) विधिलिङ् प्र.पु.बहु- गण्- (आ.प) | ५) पञ्चमी एकवचन- पितृ | ६) तृतीया बहुवचन- युष्मद् |
| ७) लट् उत्तम पुरुष एकवचन- कृ(प.प) | | |

- आ रूपपरिचयं कारयत।(७तः५) (०५)**
- | | | |
|--------------|------------|---------|
| १. कुर्यात् | २. धाता | ३. मतीः |
| ४. शशिनि | ५. वारिणोः | ६. पपाठ |
| ७. मोक्तव्या | | |

- प्र. ३.अ) सङ्ख्यावाचकानां योग्यरूपाणि लिखता।(७तः५) (०५)**
- | | | |
|---|---|-------------------------------------|
| १) --- दिने सः पुमः कर्मशालां गच्छति। (२- क्रमवाचक) | २) सदनिकायाः --- अद्वे कः निवसति? (६- क्रमवाचक) | ३) --- मित्रेण सह सः खेलति।(१) |
| ४) गायकेन तदेव गीतं ---- गीतम्। (५- आवृत्तिवाचक) | ५) छात्रा --- पुस्तकानि क्रमशः अपठत्। (३) | ६) भक्ताः ----- श्लोकान् अपठत्।(१६) |
| ७) चिरजीविनः ---- वर्तन्ते। (७) | | |

- आ) वाच्यपरिवर्तनं कुरुता। (७तः५) (०५)**
- | | | |
|---------------------------------------|--|--------------------------------|
| १. इदं सर्वैः उच्यते। | २. स्नानसमये तेन मुक्ताहारः कण्ठात् अपनीयते। | ३. देवाः अमृतं स्वर्गे लभन्ते। |
| ४. ऋषिकुमाराः वनात् कुसुमानि आनयेयुः। | ५. छात्रैः स्वाध्यायः एकाग्रतया करणीयः। | ६. अहम् अधुना न जीवेयम्। |
| ७. तिलकमहाभागः अनेन पुरुषेण पाठितः। | | |

इ) सनाम सविग्रहं च समासान् लिखता।(७तः५) (१०)

- | | | | |
|------------------|--------------|---------------|-----------------|
| १. वनदर्शनार्थम् | २. श्रवणपथम् | ३. मधुमकूजनम् | ४. चिह्नाङ्कितः |
| ५. चन्द्रसूर्यौ | ६. असत्यम् | ७. सुवचनम् | |

प्र. ४. अ) एकं श्लोकं माध्यमभाषया अनुवदत्। (०५)

- १) अकृत्वा परसन्तापमगत्वा खलमन्दिरम्।
अनुत्सृज्य सतां वर्त्म यत्स्वल्पमपि तद्बहु॥
- २) स्थानभ्रष्टा न शोभन्ते दन्ताः केशा नखा नराः।
इति विज्ञाय मतिमान्स्वस्थानं न परित्यजेत्॥

आ) संस्कृतभाषया अनुवदत्।(२तः१) (०५)

- १) कुबेराचा सेवक कोणीतरी यक्ष होता. त्याने स्वतःच्या कामात चूक केली. म्हणून कुबेर त्याच्यावर चिडला आणि त्याने त्याला शाप दिला.
- २) नंतर राजपुत्र आंघोळीकरिता सरोवरात शिरला. त्याने दगडावर ठेवलेला हार कावळीने चोरला आणि सापांच्या बिळात आणला.
